ज्ञान की वैधता
(Validity of Knowledge)

सत्य और ज्ञान
(Truth the Knowledge)

सत्य व्यक्ति की आत्मपरकता (Subjectivity) अर्थात् आत्म-अनुमति की उच्चतम अवस्था है। यह अमूर्त की परिणति साक्षात् रूप में हैं, सैद्धान्तिक ज्ञान की अपेक्षा यह एक क्रियाशील अभ्यास और अनुभूति है, इसका सम्बन्ध है 'कैसे' न कि 'क्या'। यह व्यक्ति का वह वास्तविक जीवन है जैसा कि वह विश्वास करता है और दूसरों को सिखाता है (It is actual living of all that one believes, teaches and preaches)।

अस्तित्वादी विचारक **नीत्से** का विचार है कि *"हम विचारों (ideas) को स्वीकार करते हैं, इसलिए नहीं कि वे सच हैं, अपितु लाभदायक हैं। कोई भी चीज सत्य हो सकती है, जो शक्ति देती है ओर जीवन को आगे बढ़ाने में सहायक होती है। उस सीमा तक मनुष्य के विचार सही होंगे जहाँ तक उनके परिणाम व्यावहारिक होते हैं या मानवीय शक्ति को आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं।"*

मात्र ऐतिहासिक और वैज्ञानिक तथ्यों का विश्वकोषीय ज्ञान मानव-जीवन की अखंडता और संस्कृति के लिए एक नैतिक धमकी है क्योंकि इससे उन सब चीजों के बारे में, जो महानता और कुलीनता का दावा करती हैं, व्यंग्यात्मक और शुष्क दृष्टिकोण का विकास होता है।

अस्तित्ववादी सहज ज्ञान (Inductive Knowledge) में विश्वास करते हैं। ज्ञान मानवीय होता है। व्यक्ति जीवन के मध्य जिन प्रयोजनाओं को करता है, या अनुभव प्राप्त करता है, उनके परिणामस्वरूप जो कुछ उसकी चेतना और भावनाओं में समा जाता है, वही ज्ञान है।

इसलिए ज्ञान की प्रामाणिकता व्यक्ति के मूल्यों से आँकी जाती है।

ज्ञान की वैधता का मौलिक आधार
(Basic Criteria of Validity of Knowledge)

ज्ञान की वैधता का मौलिक आधार इस प्रकार है—

(1) संज्ञानात्मक वैधता माँग करती है कि पाठ्यक्रम का विषय, प्रक्रिया, भाषा एवं शिक्षण अभ्यास उपयुकत हों एवं बच्चे की संज्ञानात्मक पहुँच में हों।

(2) विषय वैधता माँग करती है कि पाठ्यक्रम को महत्त्वपूर्ण एवं सही वैज्ञानिक विषय-वस्तु को सम्प्रेषित करना चाहिए। विषय-वस्तु का सरलीकरण जो सीखने वाले के कोगनीटिव स्तर तक अनुकूल बनाने के लिए अनिवार्य है, इतना तुच्छ नहीं किया जाना चाहिए जो मौलिक रूप से त्रुटिपूर्ण अथवा अर्थहीन है।

(3) प्रक्रिया वैधता की माँग है कि पाठ्यक्रम सीखने वालों को उन तरीकों एवं प्रक्रियाओं की प्राप्ति के लिए नियुक्त करता है जो वैज्ञानिक जानकारी को पैदा करने एवं वैध प्रमाणित करने की ओर ले जाता है एवं बच्चे की विज्ञान प्राकृतिक उत्सुकता एवं सृजनशीलता को पोषित करता है। प्रक्रिया वैधता एक महत्त्वपूर्ण आधार है चूँकि यह विद्यार्थियों को विज्ञान सीखने का ढंग सीखने में सहायता करती है।

(4) ऐतिहासिक वैधता माँग करती है कि विज्ञान पाठ्यक्रम ऐतिहासिक दृष्टिकोण से सूचित किया जाना चाहिए ताकि सीखने वालों को इस प्रकार प्रशंसा करने योगय बनाया जाए कि वे जान जाएँ कि विज्ञान की धारणाएँ समय के साथ केसे विकसित होती हैं। यह सीखने वालों को इस योग्य बनाने

में भी सहायक होती है कि वे विज्ञान को सामाजिक उद्यम के रूप में देखें एवं समझें कि सामाजिक तत्व किस प्रकार विज्ञान के विकास को प्रभावित करते हैं।

(5) पर्यावरण-सम्बन्धी वैधता की माँग है कि विज्ञान को सीखने वाले के स्थानीय एवं वैश्विक पर्यावरण को विस्तृत सन्दर्भ में रखा जाए ताकि उन्हें विज्ञान, तकनीक एवं समाज के अन्तर्मुख पर मुद्दों की प्रशंसा करने योग्य बनाया जाए एवं कार्य जगत् में प्रवेश करने के लिए उन्हें वांछित जानकारी एवं कौशल के साथ तैयार किया जाए।

(6) नैतिक वैधता माँग करती है कि पाठ्यक्रम ईमानदारी, वस्तुनिष्ठता, सहयोग, भय एवं पक्षपात से स्वतन्त्रता जैसे मूल्यों को बढ़ावा दे एवं सीखने वाले के मन में जीवन एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए चिन्ता को विकसित करें।

(7) ज्ञान वैधता तीन बातों को समाहित नहीं करती—अज्ञानता (Ignorance), त्रुटि (Error) तथा राय (Opinion)।

नैतिक विकास विभिन्न आयु वर्ग की विशेषताओं से युक्त पैटर्न (नमूने) का अनुसरण करता है। प्रारम्भिक वर्षों में बच्चे अपने निकटतम वातावरण की खोज-बीन कर रहे होते हैं एवं स्वयं अपने प्रति जागरूकता को विकसित कर रहे होते हैं। उनका व्यवहार दण्ड से बचने एवं पुरस्कार प्राप्त करने के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। वे अच्छी अथवा बुरी, सही तथा गलत धारणाओं की बात को सहमति अथवा असहमति पर निर्भर करते हुए संलग्न करते हैं। इस अवस्था में जो कुछ प्रौढ़ लोगों में देखते हैं उसी के कारक नैतिक व्यवहार के प्रति अपनी समझ बना लेते हैं।

गाँधी जी एवं सत्य
(Gandhiji and Truth)

गाँधी जी के लिए परमात्मा सत्य है और सत्य परमात्मा है। सत्य अन्दर की आवाज है। उनके अनुसार परमात्मा की प्राप्ति का केवल एकमात्र रास्ता सत्य है। यदि कोई व्यक्ति अपने मन में सत्य का प्रयोग करता है तथा इसे निष्ठा व निरन्तरता से अहिंसा से जोड़ता है तो वह निश्चय ही एक दिन परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने योग्य हो जायेगा। प्रत्येक को सत्य के लिए मरने के लिए तैयार रहना चाहिए। उसे अपना सत्य दूसरों पर थोपने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। साधारणत: सत्य का अर्थ समझा जाता है—सत्य बोलना। गाँधी जी ने इसका अर्थ विस्तृत रूप में लिया है। उन्होंने लिखा है, *"विचार में सत्य, भाषण में सत्य तथा कार्य में सत्य होना चाहिए।"*

अहिंसा सत्य के लक्ष्य की प्राप्ति का साधन है। अहिंसा में मानवता, दया, प्रेम, सहनशीलता, हृदय की पवित्रता तथा विचारों, शब्दों या क्रियाओं में उत्तेजना से स्वतंत्रता शामिल है। यह हमें सभी प्राणियों से प्रेम करने के लिए प्रेरित करती है। यह हमारी भावना की शुद्धि करती है। महात्मा गाँधी जी के शब्दों में, अहिंसा को हिंसा की अपेक्षा प्राथमिकता निम्न कारणों से दी जाती है—

- अहिंसा हिंसा से अधिक प्रभावी सिद्ध होती है।
- यह शारीरिक शक्ति पर नैतिक तथा आध्यात्मिक सिद्धान्त की जीत है।
- प्रेम तथा अहिंसा वास्तविकता से सम्बन्धित हैं और इन पर विजय पाना आवश्यक है।
- अहिंसा विरोधी की इच्छा को हिला देती है।
- अहिंसा भावना की शुद्धि करती है। एक अहिंसक व्यक्ति को एक तपस्वी का जीवन जीना पड़ता है।

गाँधी जी ने धार्मिक प्रक्रिया से ही सत्य की अनुभूति का समर्थन किया है। सत्य शक्ति हें, असत्य कमजोरी है। ज्ञान सत्य है, अज्ञानता असत्य है। अत: सत्य शक्ति, साहस तथा ऊर्जा को बढ़ाता है।